

कार्यवशमापन्नास्तादृश्यः खलु याः स्त्रियः ॥ R. 3, 2, 26. वध्याः खलु न व-  
ध्यन्ते सचिवास्तत्र रावण । ये वामुत्पयमाहूँ न नियच्छन्ति शास्त्रतः ॥ 43,  
6. परमं खलु वीर्यं ते दृश्यते 39, 2, 5. 4, 7, 3. 5, 24, 4. वानिजः खलु कामा-  
त्मा रामः — इति वदयति सो मोक्षा ज्ञानकीमविशोध्य वै 6, 103, 14. सुदु-  
खत्विदमाध्यातम् PAKSĀT. 176, 11. मैवं वद । धर्मबुद्धिः (Nom. pr. und zu-  
gleich adj.) खल्वहं नैनसौकर्म करोमि 96, 22. असाधुदर्शी खलु तत्रभवा-  
न्काश्यपः । यः u. s. w. ÇĀK. 9, 12. 26, 7. 64, 21. 71, 22. 90, 20. 94, 5. 101,  
5, 9. 110, 8. 16, 49. PAKSĀT. II, 33, 110. III, 236. RAGH. 18, 48. दृष्टं खल्व-  
त्रलिप्तो ऽसि R. 3, 33, 72. एकेन खलु बाणेन मर्माण्यभिरुतै मयि । द्वावन्धौ  
निरुतौ वृद्धौ माता जनपिता च मे ॥ 2, 63, 37. ईदृशा दाटकारण्ये यदि हे-  
ममया मृगाः । न मिथ्या खलु काकुत्स्थ लोककान्तमिदं वनम् ॥ 3, 49, 7. व-  
धाय खलु रत्नमाम् 37, 4. अस्मादङ्गुलीयोक्लम्भात्खलु स्मृतिरुपलब्धा ÇĀK.  
108, 7. अथ खलु 3, 11. कामं खलु — तथापि 60, 17, v. l. ÇUK. 44, 11. स्पृ-  
क्ष्यामि खलु दुर्ललितयास्मै ÇĀK. 103, 4. निवेद्य खलु R. 3, 6, 17. Hit. I, 143.  
Besonders beliebt ist die Verbindung न खलु *durchaus nicht* R. 1, 74,  
21. 3, 33, 17. 4, 31, 6. BHARTR. 2, 31. PAKSĀT. 231, 6. ÇĀK. 18, 23. 21, 17. 30,  
14. 33, 20. 66, 17. 92. 113, 146. VIKR. 21, 21. MEGH. 39, 78, 92. RAGH. 3,  
51. 9, 28. VET. 1, 3. न खलु न खलु ÇĀNTIÇ. 1, 28. ÇĀK. 10, 30, 7. न भद्र ख-  
लु पश्यामो किंचिदुद्धारितं त्वयि R. 3, 1, 10. न प्रूय प्रदातव्या कन्या ख-  
लु विप्राश्चता 4, 22, 13. VET. 24, 16. न खलु fragend ÇĀK. 90, 10. 108, 16.  
KUMĀRAS. 4, 24. कदा नु खलु N. 16, 8. वा नु खलु ÇĀK. 32, 11. 41, 17. को  
नु खलु 101, 13. 20. किं नु खलु 17, 13. 32, 12. 33, 2. 60, 4. 71, 20. (किं  
खलु 106, 3, v. l. त्वं नु खलु BṬH. ĀR. Up. 3, 1, 2) अहेतो नु खलु 60, 12. अहेतो  
खलु PAKSĀT. I, 340. किं नाम खलु MĀKĪ. 64, 4. तु खलु M. 2, 247. 10, 117.  
R. 4, 26, 16. Nach verschiedenen pronomm. und pronom. advv.: सा खलु  
ÇĀK. 7, 17. 31, 10. 97, 9. ते खलु ÇĀNTIÇ. 1, 15. यः — स खलु R. 4, 9, 70. ए-  
ष खलु ÇĀK. 7, 9. 61, 6. 99, 17. अस्मै खलु R. 3, 38, 10. इयं खलु ÇĀK. 16, 3.  
104, 21. अस्म्य खलु 6, 13. अत्र खलु 98, 3. 111, 18. अतः खलु 98, 21. 104,  
8. 112, 9. यदा तु — तदा खलु JĀGĪ. 2, 64. यदैव खलु ÇĀK. 79, 14. देखि मे  
खल्विमो राजन्तात्रयाय MBH. 1, 7828. मया खलु R. 3, 33, 39. मम खलु PAKSĀ-  
KĀT. 76, 21. तया च खलु R. 3, 33, 16. Ausnahmsweise folgt das hervorge-  
hobene Wort nach: धिगस्तु खलु मानुयं धिगस्तु परवश्यताम् R. 5, 26,  
18. अथ प्रभृति भद्रं ते मण्डलं खलु शाश्वतम् । अनुलेपं च सुचिरं गात्रान्ना-  
यगमिष्यति ॥ R. 3, 3, 19. Sogar am Anfange eines Satzes oder Verses  
wird खलु angetroffen: खल्वहं त्वं न तुलये नावमन्ये च राघव R. 4, 9,  
100. कपोत खलु शीतं मे किमत्राणं विधीयताम् PAKSĀT. III, 163. खल्विदं  
मरुदाश्चर्यं यत् u. s. w. BṬH. P. 6, 12, 21. खल्वयं सिद्धः पन्थाः (v. l. प्र-  
मिद्धः खल्वयं पन्थाः) PRAB. 82, 9. — Die Lexicographen geben folgende  
Bedeutungen: अनुनय (साल्वन), निज्ञासा, निषेध, वाक्यालंकार AK. 3, 4,  
32, 16. H. an. 7, 46. fg. MED. avj. 73, 74. वीप्सा H. an. MED. मान, पूरणे  
पदवाक्ययोः (expletive Partikel) MED. Die Bed. प्रतिषेध *Abwehr* mit ei-  
nem gerund. wird schon P. 3, 4, 18 erwähnt; mit einem instr. oder ei-  
nem gerund. Vop. 26, 201.

खलुन् m. Finsterniss TRIK. 1, 2, 2. Dieses Thema stellen WILS. und  
ÇKDR. auf; das Wort zerfällt wohl in ख + लुक् (von लुच्?), welches  
bei den Grammatikern in der Bedeutung von Niète, Nichts häufig im  
Gebrauch ist.

खलुरेष m. ein best. vierfüßiges Thier (मृगभेद) ÇABDAR. im ÇKDR.

खलूरिका f. ein zu Waffenübungen bestimmter Platz H. 788. — Vgl.  
खुरली.

खलेधानी (खले, loc. von खल, + धानी) f. = खनेवाली GĀTĀDH. im  
ÇKDR. (°धानी, WILS. wie wir).

खलेयुमम् (खले + युम) adv. zur Zeit der Spreu auf der Tenne, zur  
Dreschzeit gaṇa तिष्ठदुप्रभृति zu P. 2, 1, 17.

खलेयवम् (खले + यव) adv. zur Zeit der Gerste auf der Tenne, zur  
Dreschzeit der Gerste gaṇa तिष्ठदुप्रभृति zu P. 2, 1, 17.

खलेवाली (खले + वाली) f. der Pfosten in der Mitte der Dreschtenne.  
an welchen die Ochsen gebunden werden, H. 894 (°वाली). ĀÇV. ÇR. 9,  
7. KĀTJ. ÇR. 22, 3, 48.

खलेश m. ein best. Fisch, = खलिश HĀR. 189. Auch खलेण्य ebend.  
TRIK. 1, 2, 28. ÇABDAR. im ÇKDR. — Vgl. खणेट.

खल्य (von खल) 1) adj. parox. = खलाय कृतम् P. 5, 1, 7. auf der Tenne  
befindlich VS. 16, 33. — 2) f. आ a) oxyt. eine Menge von Tennen P. 4,  
2, 50. AK. 3, 3, 42. — b) N. pr. eines Frauenzimmers v. l. im gaṇa ति-  
कादि zu P. 4, 1, 154.

खल्यका (von खल्य) f. N. pr. eines Frauenzimmers gaṇa तिकादि zu  
P. 4, 1, 154.

खल्व्, खल्वते wackeln, los sein SUÇR. 1, 301, 8. — Vgl. खल्.

खल्व् 1) m. a) Dille, cucullus: अश्वत्थपत्रखल्व् SUÇR. 2, 364, 4, 6. त्रीणि  
द्व्याकृतीनि खल्व्मुखानि (यन्त्राणि) त्रीण्यधप्रणिधानार्थम् mit einer dü-  
tenförmigen Schnauze versehen 4, 23, 4, 7. Nach ÇKDR. (इति वैद्यकम्)  
ein Gefäß, in dem Arznei zerrieben wird (औषधमर्दनपात्र). — b)  
b) eine Art Zeug (वस्त्रभेद) TRIK. 3, 3, 389. H. an. 2, 483. MED. I. 12. —  
c) Leder diess. — d) eine Art Schlange H. 1023. — e) Vertiefung (नि-  
म), Grube (गर्त) TRIK. H. an. MED. — f) der Vogel Kāṭaka diess. — 2)  
f. ई gichtische Schmerzen in den Händen und Füßen H. an. MED. ख-  
ल्वी तु पादवङ्गेरुकरमूलावमोदनी MĀDHAVAK. im ÇKDR.

खलातक m. N. pr. des ersten Ministers von Bindusāra BURN. Intr.  
363.

खलिक्का f. Bratpfanne ÇABDAR. im ÇKDR.

खलामर (astrol.) der zehnte Jōga Ind. St. 2, 274.

खलिह adj. kahlköpfig ÇABDAR. im ÇKDR. — Vgl. खलानि.

खलिश m. v. l. für खलिश ÇKDR.

खलीह adj. = खलिह TRIK. 2, 6, 12.

खल्व m. eine best. Körner- oder Hülsenfrucht: तया पिनम् स क-  
मीन्दृपदा खल्वौ इव AV. 2, 31, 1. 5, 23, 8. VS. 18, 12. ÇAT. Br. 14, 9, 3, 22.  
KACÇ. 27, 82. GRUJASĀGṚ. 2, 57.

खल्वट m. a severe cough WILS.

खल्वल m. pl. N. pr. einer Schule: खल्वला मरुखल्वला: Ind. St.  
3, 274.

खल्वट adj. kahlköpfig H. 432. BHARTR. 2, 86. — Vgl. खलानि.

खल्, खलानि oder खलानि v. l. für खल् DHĀTUP. 31, 59.

खलली (ख + वल्) f. Name einer Pflanze (s. आकाशवल्ली) RĀGAS. im  
ÇKDR.

खवारि (ख + वारि) n. Regenwasser RĀGAS. im ÇKDR.

खवाप्य (ख + वाप्) m. Schnee, Reif HĀR. 67.